ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO. 72-74
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

युवा वर्ग में व्यक्तित्व के बदलते आयाम : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

राम नरेश यादव
एसो0 प्रो0 समाजशास्त्र विभाग, श्री मु0म0 टाउन पी0जी0 कालेज, बलिया (उ0प्र0) भारत

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

सामाजिक जीवहन की गतिशीलता में युवा–वर्ग की अहं भूमिका होती है, विशेषकर उस युवा–वर्ग की बात कर रहे हैं जो चेतनशील, संवेदनशील औश्र सुशिक्षित हो। यद्यपि सामाजिक गतिशीलता एक सार्वभौमिक और स्वाभाविक वास्तविकता है। प्रत्येक समाज चाहे वह जटिल हो या सरल, सभ्य हो या असभ्य आदिम हो अथवा आधुनिक, परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है। परिवर्तन की अस स्वाभाविक प्रक्रिया को तीव्र करने में युवा–वर्ग का योगदान अधि ाक होता है। आधुनिक समाज, आदिम समाज, की तरह सरल न होकर जटिल और विविधतापूर्ण समाज है। इस समाज में अनेक प्रकार की विध्वंसकारी और विघटनकारी तत्व मौजूद रहते हैं, जाणे सामाजिक जीवन की गतिशीलता को कम करते है। यद्यपि इससे परिवर्तन की प्रक्रिया रूकती नहीं है तथापि उसके दर में भिन्नता अवश्य आ जाती है। परिवर्तन जिस प्रकार अवश्यभांवी है उसी प्रकार युवा वर्ग का समाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों में, सहभागिता अनिवार्य होती है, जिसके कारण परिवर्तन निरन्तर जारी रहता है।

युवा वर्ग सामाजिक जीवन की धारा को बदलने की क्षमता रखने वाला एक ऐसा समूह है जो न केवल सामाजिक गत्यात्मकता को तीव्र करता है बल्कि परम्परावादी रूढ़िवादी मूल्यों से संघर्ष भी करता है और उसकी जगह नये मूल्यों और नवीन आधुनिक आदर्शों को स्थापित करता है जिससे सामाजिक परिवर्तन की व्यापकता अनिवार्य हो जाती है सामाजिक परिवर्तन की अवश्यंभाविता के संदर्भ में समाज विज्ञानी एण्डरसन तथा पारकर ने अपनी पुस्तक में स्पष्ट किया है कि सभी पहलुओं की भाँति समाज भी हमेशा कुछ ऐसी शक्तियों से प्रभावित रहा है, जिसके कारण परिवर्तन होता है।

आधुनिक भारत में होने वाले सामाजिक परिवर्तन के इतिहास को देखा जाय तो स्पष्ट होगा कि युवा वर्ग एवं छात्रों के आंदोलन के कारण ही परम्परावादी मूल्यों का ह्रास हुआ है और समाज में आधुनिकता की नींव पड़ी है।

आज के युवा छात्र ही राष्ट्र के निर्माता हैं। यह आवश्यक है कि छात्रों की अभिज्ञाओं एवं आकांक्षाओं के प्रति हमें भी सजग रहना होगा और छात्रों को अधिक से अधिक जागरूक करना होगा ताकि सामाजिक प्रगति की प्रक्रिया को तीव्र किया जा सके। किन्तु वर्तमान समय में निश्चित आदर्श, निश्चित उद्देश्य एवं निश्चित दिशा के अभाव में छात्र शक्ति भटक रही है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल स्वार्थी समुह आदि इनका गलत उपयोग करने में लग गये है। कुछ समाजशास्त्रियों की ऐसी मान्यता है कि सामाजिक एवं राजनीतिक नेतागण अपने–अपने स्वार्थो की पूर्ति हेतु युवा–छात्रों का उपयोग करते है। चूँकि महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय युवा छात्रों का गढ़ होता है जहॉ प्रायः यही देखा जाता है कि छात्रों में व्याप्त असंतोष एवं आक्रोश तथा दिशाहीन आन्दोलनों को पकड़ने में निहित स्वार्थी समूह, छात्रों के बीच अव्यवस्था उत्पन्न करके अपना नेतृत्व बनाये रखना चाहते हैं।

असंतोष और अव्यवस्था के इस माहौल में युवा छात्रों के बीच गुण्डागर्दी बढ़ जाती है। इस गुण्डागर्दी में आम छात्र की भूमिका नहीं होती। आम विद्यार्थी इस संगठित युवा छात्र का विरोध असंगठित होने के कारण नहीं कर पाते। परिणामतः छात्रों के एक वर्ग के छात्र में नेतृत्व बना रहता है। इधर के वर्षों में युवा छात्रों के बीच राजनीति में आगे जाने की प्रवृत्ति का तीव्र विकास हुआ है और वे भी येन केन प्रकारेण राजनीतिक दुनिया में अपना पैर जमाना चाहते है।

आज का सामान्य विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय की राजनीति में थोडी बहुत सक्रिय है, मुख्यमंत्री, राजमंत्री बनने की आकांक्षा रखता है और विधानसभा के टिकट प्राप्त करने की इच्छा से राजनीति की दुनिया में दौड़ लगाता है। यहॉ तक कि छात्रों की समस्याओं से जुझने एवं निदान करने के बजाय उसे और बढ़ा देते है ताकि उनकी चलती बनी रहे। सेमिनार

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

एवं अभिभाषणों का आयोजन कर उसमें किसी शिक्षाविद् को न बुलाकर किसी राजनीतिक नेता को मुख्य अतिथि अथवा मुख्य वक्ता के रूप में बुलाते है और उनके स्वागत में चंदा उगाहते है और हजारों रूपये खर्च करते हैं।

युवा छात्र की इच्छाशक्तियों और आकांक्षाओं से युक्त छात्र आन्दोलन के पिछले दशक की घटनाओं और उसके कारणों की खोज करते हुए राजेन्द्र पाण्डेय ने स्पष्ट किया था कि राजनीतिक छात्र युवा आन्दोलन शक्ति प्राप्ति के आकांक्षी होते हैं।

भारत के पिछले दो दशक के छात्र इतिहास भी छात्र आन्दोलनों के इतिहास रहे है, जिसके माध्यम से उनके आक्रोश और आकांक्षाएँ स्पष्ट हुए हैं। युवा छात्र आकांक्षओं एवं इच्छाशक्ति का प्रकटीकरण आन्दोलन के माध्यम से ही होता है। इन दो दशक में भारतीय विश्वविद्यालय छात्र आंदोलन के कारण अवस्थित रहे है। जबकि विश्वविद्यालय न केवल शिक्षा का केन्द्र है, बल्कि एक ऐसी आधुनिक तपोभूमि है, जहाँ पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का चतुर्दिक और बहुआयामी विकास होता है। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ सामाजिक समायोजन का विकास भी यहीं होता है। लेकिन आज की बदली हुई स्थिति इसके विपरीत है। शिक्षा जगत का वातावरण पूर्णतः विषाक्त है। उनके व्यक्तित्व के प्रतिमान भी बदल चुके हैं। अब वे एक आदर्श विद्यार्थी की जगह जागरूक और नये जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व वाले बनना अधिक पसंद करते हैं। उनके रहन–सहन, जीने की विधि, बात करने का ढंग, व्यवहार के नये प्रतिमान आदि बदल रहे हैं। युवा छात्र के व्यक्तित्व के समुचित विकास में जब सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक बाधाएँ आती है तो वे आक्रोश से भर जाते हैं और असंतोष की ज्वाला को आंदोलन का रूप दे डालते हैं यही कारण है कि जबतक उन्हें अपना निश्चित भविष्य का पता नहीं रहेगा उनका वास्तविक विकास असंभव व असुरक्षित है। युवाओं के बीच तनाव का वातावरण व्याप्त है। बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप में उनके सामने खड़ी है। जीवन के सभी क्षेत्र में परिव्याप्त पैरवी, जातिवाद, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रवाद तथा भ्रष्टाचार आदि के कारण युवा–छात्रों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और वे हमेशा इसके कारण तनाव की स्थिति में रहते हैं।

युवा छात्र असंतोष आक्रोश एवं आन्दोलन आदि वस्तुतः आधुनिक शिक्षा पद्धति के दोष के कारण उपजा हुआ नया अभिव्यंजना है। नई शिक्षा–पद्धति को अपनाने और उसके व्यवहारिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए आज न केवल एक महाविद्यालय बल्कि सभी महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के युवा–छात्र संगठित एवं आन्दोलित हो रहे हैं, बल्कि सम्पूर्ण भारत में ही नई लहर दौड़ पड़ी है। युवा–छात्र इच्छाशक्ति में पद प्राप्ति और प्रस्थिति निर्माण के साथ राजनीतिक सत्ता में भागीदारी की भावना भी भर गई है। वर्तमान छात्र समाज के आन्दोलनों में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने की प्रवृत्ति प्रमुख रहती है। इसे प्राप्त करने के लिए अब युवा छात्र भी जातिवाद, भाई भतीजावाद और क्षेत्रवाद तथा पैसे को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं और पैसे प्राप्त करने के लिए कई गलत तरीकों को इस्तेमाल करते हैं, जिनमें चन्दा वसूली से लेकर गलत नामांकन करवाने, परीक्षा में अधिक अंक दिलवाने, परीक्षा के कोड का पता लगवा देने से लेकर छात्रावासों में जगह दिलवाने तक की बातें शामिल होती है।

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में छात्र–छात्राओं की इच्छा की पूर्ति तबतक संभव नहीं जबतक सामाजिक सोच में बदलाव न आ जाए। वैसे तो हम सब जानते ही हैं कि समाज एक परिवर्तनशील प्रक्रिया से गुजरता है लेकिन उसकी गति में तीव्रता लाने के लिए यह आवश्यक है कि सामाजिक, राजनैतिक एवं शिक्षा जगत के विचारक छात्र–छात्राओं की मूल भावनाओं और समस्याओं को स्वीकार करते हुए उसके हित में व्यापक सुधार लाएँ। अतः यह आवश्यक है कि युवा छात्र–छात्राओं की इच्छाओं एवं उचित अधिकारों की रक्षा समाज के सभी घटकों द्वारा किया जाना चाहिए। जबतक इस प्रकार के कार्य नहीं किए जायेंग तबतक व्यक्तित्व में नये प्रतिमान नहीं उभरेंगे। जरूरत है कि उनके व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए सही दिशा निर्देश दिया जाए और उनकी रचनात्मक शक्ति को समाजपयोगी बनाया जाय। उनकी राह में आने वाली समस्याओं का यथासंभव व्यावहारिक निदान ढूँढा जाय तभी विश्वविद्यालय का शैक्षणिक परिवेश भी शुद्ध होगा और सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी तेज होगी।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एण्डरसन तथा पारकरः 'सोसायटी इट्स ऑर्गेनाइजेशन एण्ड आपरेशन'
2. एस0एम0 लिपसेट 'स्टूडेन्ट पोलिटिक्स, बेसिक बुक्स' न्यूयार्क 196 पाण्डेय राजेन्द्र : स्टूडेन्ट मूवमेंट इन दि पोस्ट इण्डिपेन्डेन्ट इंडिया स्टक्चर एण्ड डायनिमिक्स। पेपर प्रेजेन्टेड इन नेशनल सेमिनार ऑन रोल आफ सोशल मूवमेन्ट इन कन्टेक्सट ऑफ डेवलपमेन्ट, बी0एच0यू0, 1989
3. के0 केनेस्टेन 'सेकेंड थोटस आव स्टूडेन्ट रेडिकल्स चेंज', मेगजीन, वाल्यूम, 1961
4. योगेश अटल 'चेंजिंग फ्रेन्टियरस ऑफ कास्ट नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. एस0एन0 सरकार 'स्टूडेन्ट अनरेस्ट इन बिहार', पी0एच–डी0 थीसीस, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 1964
6. योगेन्द्र सिंह 'माडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन' 1978, विलसन इंडिया, नई दिल्ली।
7. शिवदत्त त्रिपाठी 'सामाजिक आंदोलन की अवधारणा और राजनीतियां : भारतीय समाज और संस्कृति', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1985।
8. डॉ0 रमेशनन्दन द्विवेदी 'सामाजिक आन्दोलन का समाजशास्त्र गंगाशरण गौण्ड सन्स, 1985।
9. एस0सी0 दूबे 'मोडनडिजेशन एण्ड इट्स एडोपटेड डिमान्ड्स ऑन इंडियन सोसायटी प्रकाशित आलेख दि सायकोलोजी ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, एम0 गोरे एम0सी0आर0टी0, नई दिल्ली, 1967।
10. सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव 'भारत में सामाजिक आन्दोलन और परिवर्तन' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14